विद्यालय नेतृत्व

शिक्षण–अधिगम बदलाव प्रक्रियाः विद्यालय में आकलन हेतु नेतृत्व

भारत में विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रक्रिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

यह विद्यालय नेतृत्व ओईआर (ओपन एजुकेशनल रिसोर्स) TESS-India द्वारा विद्यालय प्रमुखों को उनकी समझ और कौशलों को बहतर बनाने के लिए परिकल्पित 20 इकाइयों के समुच्चय में से एक है ताकि वे अपने विद्यालय में अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया का नेतृत्व कर सकें।

ये इकाइयाँ स्टाफ, छात्रों और अन्य लोगों द्वारा विद्यालय में किए जाने के लिए हैं तथा आवश्यक रूप से अभ्यास आधारित हैं। जो प्रभावी विद्यालयों के शोध एवं शैक्षणिक अध्ययन पर आधारित हैं।

इन इकाइयों के अध्ययन के लिए कोई अनुशंसित क्रम नहीं है, लेकिन 'विद्यालय प्रमुख सक्षमकर्ता के रूप में' शुरू करने के लिए सर्वोत्तम स्थान रखता है, क्योंकि यह संपूर्ण समुच्चय के लिए दिशा प्रदान करता है। आप विशिष्ट थीमों से संबंधित संयोजनों में इकाइयों का अध्ययन करने का चुनाव कर सकते हैं; ये इकाइयॉ नेशनल कॉलेज ऑफ लीडरशिप करिकुलम फ्रेमवर्क (भारत) के मुख्य क्षेत्रों के साथ संरेखित किए गए हैं: जिनके प्रमुख क्षेत्र 'विद्यालयी नेतृत्व पर दृश्य', 'स्वयं का प्रबंधन और विकास करना'; 'शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण करना'; 'भागीदारियों का नेतृत्व करना', नवप्रवर्तन एवं नेतृत्व पर उन्मुखीरकण आदि।

कुछ इकाइयाँ एक से अधिक मुख्य क्षेत्र को संबोधित करती हैं।

इन इकाइयों का उपयोग विद्यालय प्रमुखों द्वारा स्व-अध्ययन के लिए या पढ़ाए गए नेतृत्व कार्यक्रम के भाग के रूप में किया जा सकता है। दोनों ही परिप्रेक्ष्यों में, व्यक्तिगत सीखने की डायरी रखने में और गतिविधियों और केस स्टडी की चर्चा के माध्यम से अनुभव साझा करने में उपयोगी हैं। शब्द 'विद्यालय प्रमुख' का उपयोग इन इकाइयों में मुख्याध्यापक, प्रधानाध्यापक, प्रिंसिपल, सहायक अध्यापक या विद्यालय में नेतृत्व का दायित्व लेने वाले किसी भी व्यक्ति के संदर्भ में किया जाता है।

वीडियो संसाधन

आइकन संकेत देता है कि वे *TESS*-India विद्यालय नेतृत्व वीडियो संसाधन कहाँ हैं, जिनमें विद्यालय प्रमुख बतलाते हैं कि वे अपने विद्यालय में शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में सुधार करने के लिए परिवर्तन कैसे ला रहे हैं। हमें उम्मीद है कि वे आपको इसी तरह के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। इन्हें पाठ-आधारित इकाइयों के माध्यम से आपके कार्य अनुभव को परिपूर्ण एवं संमृद्ध करने के लिए रखा गया है, यदि आप उनका उपयोग करने में असमर्थ रहते हैं, तो भी यह इकाइयॉ उपयोगी एवं लाभाकारी हैं। *TESS*-India के वीडियो संसाधनों को *TESS*-India की वेबसाइट (*http://www.tess-india.edu.in/)* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। विकल्प के तौर पर, आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी उपयोग कर सकते हैं।

TESS-India विद्यालय समर्थित शिक्षक–शिक्षा परियोजना के बारे में :–

TESS-India का उद्देश्य है छात्र-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोण के विकास में विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों की सहायता के लिए मुक्त शिक्षा संसाधनों *(OERs)* के प्रावधानों के माध्यम से भारत में प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षकों की कक्षा अभ्यासों में सुधार लाना। *105 TESS*-India विषय *OERs* शिक्षकों को भाषा, विज्ञान और गणित के विषयों में विद्यालय की पाठ्यपुस्तक के लिए एक पूरक पुस्तिका प्रदान करते हैं। वे शिक्षकों के लिए अपनी कक्षाओं में विद्यार्थियो के साथ प्रयोग करने के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं, जिनमें यह दर्शाने वाले केस स्टडी भी शामिल रहती हैं कि अन्य शिक्षकों द्वारा उस विषय को कैसे पढ़ाया गया, अपनी पाठ योजनाएँ तैयार करने के लिए तथा विषय संबंधी ज्ञान के विकास में सहायक संसाधन भी शामिल हैं।

TESS-India *OERs* को भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किया गया है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in/)*। *OER* भाग लेने वाले प्रत्येक भारतीय राज्य के लिए उपयुक्त, कई संस्करणों में उपलब्ध हैं, उपयोगकर्ताओं को इन्हें अपनाने, अपनी स्थानीय जरूरतों व संदर्भों की पूर्ति के लिए उनका अनुकूलन एवं स्थानीयकरण करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

संस्करण *2.0* *SL06v1*

Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: *http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/*

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

आकलन को मोटे तौर पर परीक्षाओं में सफलता या विफलता के साथ संबद्ध किया जाता है। परीक्षा में सफलता महत्वपूर्ण है और उसे अच्छे कॉलेज में पढ़ाई, सामाजिक स्थिति और बाद के व्यावसायिक जीवन में सफलता से जोड़ा जाता है। तथापि, परीक्षा के लिए तैयारी पर फोकस अधिगम अनुभव को प्रतिकूल ढंग से प्रभावित कर सकता है। एनसीएफ (NCERT, 2005, पृ. 71) में समस्या की गहराई को पहचाना गया उसमें कहा गया है किः–

हम उन बुरे प्रभावों के बारे में चिंतित हैं जो परीक्षाएं पढ़ाई को बच्चों के लिए सार्थक और आनंदमय बनाने के प्रयासों पर डालती हैं। वर्तमान में, बोर्ड की परीक्षाएं प्री-विद्यालय से लेकर विद्यालय में बिताए गए सभी वर्षों में सारी परीक्षाओं और आकलन को नकारात्मक ढंग से प्रभावित करती हैं।

इस इकाई में, विद्यार्थियों के विकास की निगरानी और मार्गदर्शन के एक अवसर के रूप में आकलन का अन्वेषण करेंगे जब उसे कक्षा के प्रतिदिन अभ्यास के साथ एकीकृत किया जाये। ऐसा सतत आकलन शिक्षकों को विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया के बारे में नियमित प्रतिक्रिया प्रदान करता है जिसका उपयोग आपके विद्यालय के विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी विद्यार्थी बनाने में मदद करने के लिए किया जा सकता है। अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिए आपके शिक्षकों को प्रमाण एकत्रित करके, जानकारी का विश्लेषण करके, अधिगम–गतिविधियों को संशोधित करके अपने विद्यार्थ्थियों का आकलन और निगरानी करनी होगी।

अधिगम डायरी

इस इकाई में काम करते समय आपसे अपनी अधिगम डायरी में नोट्स बनाने को कहा जाएगा। यह डायरी एक किताब या फोल्डर है जहाँ आप अपने विचारों और योजनाओं को एकत्र करके रखते हैं। संभवतः आपने अपनी डायरी शुरू कर भी ली है।

इस इकाई में आप अकेले काम कर सकते हैं, लेकिन यदि आप अपने अधिगम चर्चा किसी अन्य विद्यालय प्रमुख के साथ कर सकें तो आप और भी अधिक सीखेंगे। यह आपका कोई सहकर्मी, जिसके साथ आप पहले से सहयोग करते आए हैं, या कोई व्यक्ति हो सकता है जिसके साथ आप नए संबंध का निर्माण कर सकते हैं। इसे नियोजित ढंग से या अधिक अनौपचारिक आधार पर किया जा सकता है। आपकी अधिगम डायरी में बनाए गए आपके नोट्स इस प्रकार की बैठकों के लिए उपयोगी होंगे और साथ ही आपकी दीर्घावधि की शिक्षण-प्रक्रिया और विकास का चित्रण भी करेंगे।

इस इकाई में विद्यालय प्रमुख क्या सीख सकते हैं

- सीखने के लिए आकलन और आकलन के लिए सीखने के बीच अंतर करना।
- अपने विद्यालय में शिक्षकों के साथ निर्माणात्मक आकलन का विकास करने के लिए रणनीति का नेतृत्व करना।
- विद्यार्थियों की उनके अधिगम में सुधार करने में मदद करने वाली प्रतिक्रिया देने के लिए निर्माणात्मक आकलन के दौरान एकत्र किए गए प्रमाण और डेटा का उपयोग करने में शिक्षकों की मदद करना।

1 निर्माणात्मक और योगात्मक आकलन

आकलन के दो प्रकार होते हैं जिन्हें एक दूसरे से अलग माना जाता है क्योंकि उनका उपयोग अलग-अलग तरीकों से और भिन्न प्रयोजनों के लिए किया जाता है। आप अपने स्वयं के शैक्षणिक अनुभव से योगात्मक आकलन से बहुत परिचित होंगे, लेकिन हो सकता है निर्माणात्मक आकलन में मूल्य और अवसर का पूरी तरह से अन्वेषण नहीं किया होगा – या हो सकता है आप उसे पहले से ही कर रहे हों लेकिन अपने कौशल के बारे में पूरी तरह से नहीं जानते हो।

- निर्माणात्मक आकलन को कई लोगों द्वारा **'**सीखने *के लिए* आकलन**'** भी कहा जाता है। इस प्रकार के आकलन का मुख्य प्रयोजन विद्यार्थियों को वह रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करने में सक्षम बनाना है जो उन्हें बेहतर सीखने और प्रभावी प्रगति करने में उनकी मदद करेगी। ऐसी प्रतिक्रिया आम तौर पर (लेकिन हमेशा नहीं) शिक्षकों द्वारा दी जाती है।
- योगात्मक आकलन को **'**सीखने *का* आकलन**'** के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार के आकलन का प्रयोजन शिक्षक को विद्यार्थियों की उपलब्धि और कार्य प्रदर्शन की पहचान करने में सक्षम करना है, जिसमें अधिगम अवधि एक सत्र या वर्ष हो सकती है।

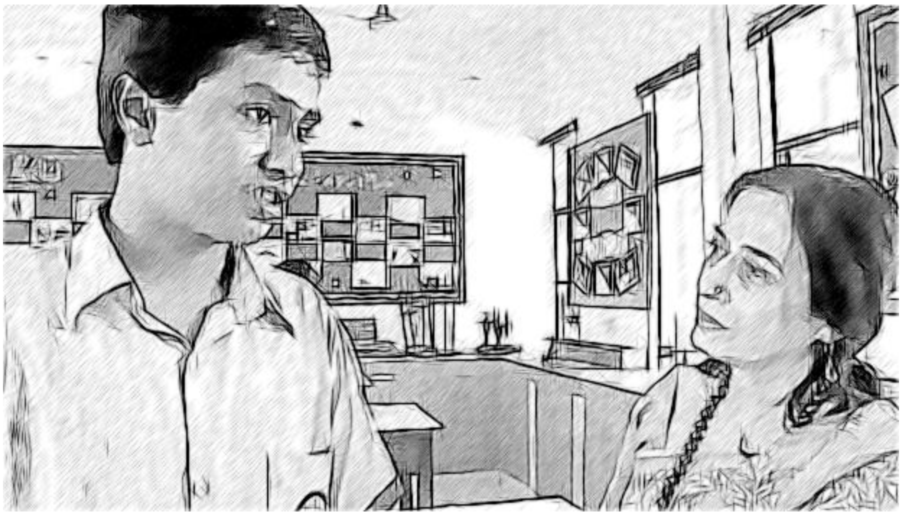

चित्र **1** विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया में अंतरों पर चर्चा करना।

योगात्मक आकलन का उपयोग आम तौर पर एक विद्यार्थी की अन्य विद्यार्थियों के साथ तुलना करने के लिए किया जाता है, जबकि निर्माणात्मक आकलन का उपयोग अधिगम प्रगति के लिए किया जाता है।

निर्माणात्मक आकलन विद्यार्थियों के आगे बढ़ते जाने और सीखने में प्रगति करने के लिए मार्ग बनाता है। यह निम्नलिखित की पहचान कर सकता है:

- विद्यार्थी क्या कर सकता है और क्या नहीं?
- विद्यार्थियों को क्या कठिन लगता है?
- विद्यार्थियों को हो सकने वाली गलतफहमियाँ और समझान्तर।

इसमें शामिल होता है:

- समझान्तरों की चर्चा करते हुए, विद्यार्थी के साथ संवाद
- विद्यार्थी का अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सक्रिय होना
- स्वयं और साथी की समीक्षा सहित प्रगति की निगरानी।

सामयिक और उपयोगी प्रतिक्रिया प्रक्रिया का हिस्सा है क्योंकि वह सुधरने में विद्यार्थियों की मदद करता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थी और शिक्षक दोनों अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने लिए दृढ़ रहें जब तक कि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त न कर लें, जिसके लिए निश्चित तौर पर शिक्षक को विद्यार्थी की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने अध्यापन में समायोजन करने पड़ सकते हैं।

इसलिए, निर्माणात्मक आकलन का योगात्मक आकलन के मुकाबले बहुत अलग प्रयोजन और दृष्टिकोण है, जो अधिक औपचारिक है। निर्माणात्मक आकलन कक्षा के संदर्भ में संपन्न होता है और शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संबंध की बुनियाद पर विकसित होता है। निर्माणात्मक आकलन (सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन, 2009) की मुख्य विशेषताएं ये हैं:

- वह नैदानिक और सुधारात्मक है
- वह प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए प्रावधान करता है
- वह विद्यार्थियों के स्वयं सीखने में उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए मंच प्रदान करता है
- वह शिक्षकों को आकलन के नतीजों को ध्यान में रखते हुए अध्यापन को समायोजित करने में सक्षम करता है
- वह उस अगाध प्रभाव की पहचान करता है जो आकलन विद्यार्थियों की प्रेरणा और आत्म-सम्मान, जिनके अधिगम प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव होते हैं, पर डालता है।
- वह विद्यार्थियों का स्व–आकलन करने और सुधार करने के तरीके को समझने में सक्षम होने की जरूरत की पहचान करता है
- वह जो कुछ पढ़ाया जाना है उसकी परिकल्पना के लिए विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान और अनुभव की नींव पर विकसित होता है
- कैसे और क्या पढ़ाया जाना है यह तय करने के लिए अधिगम विभिन्न शैलियों को समाविष्ट करता है
- विद्यार्थियों को वे मापदंड समझने को प्रोत्साहित करता है जिनका उपयोग उनके काम को परखने के लिए किया जाएगा
- विद्यार्थियों को प्रतिक्रिया के बाद उनके काम को सुधारने का अवसर प्रदान करता है
- विद्यार्थियों की अपने साथियों की सहायता करने, और उनके द्वारा सहायता किए जाने में मदद करता है।

निर्माणात्मक आकलन शिक्षक को वहाँ से आगे बढ़ने का अवसर देता है जहाँ विद्यार्थी होता है और विद्यार्थी को यह समझने का मौका देता है

कि उन्हें सफल होने के लिए क्या करना है। इसलिए निर्माणात्मक आकलन विद्यार्थी को शामिल करता है और विद्यार्थी को उसके अधिगम का स्वामित्व प्रदान करता है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) का वर्णन (सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजुकेशन, 2009) निम्न प्रकार से किया जाता है:

> सीसीई का मुख्य जोर विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावात्मक, शारीरिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को सुनिश्चित करते हूए उनकी सतत प्रगति पर होता है और इसलिए वह विद्यार्थी की शैक्षिक योग्यताओं तक ही सीमित नहीं होगा। वह आकलन का उपयोग विद्यार्थियों […] को प्रतिक्रिया और अनुवर्ती काम की व्यवस्था करने के लिए जानकारी प्रदान करने को प्रेरित करने के साधन के रूप में करता है ताकि कक्षा में अधिगम प्रक्रिया को सुधारा जा सके और विद्यार्थी की प्रोफाइल की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत की जा सके।

गतिविधि 1 आपसे विद्यालय के परिवेश में निर्माणात्मक और योगात्मक आकलन के बीच अंतरों के बारे में सोचने को कहती है। यह वह गतिविधि है जिसका उपयोग आप अपने शिक्षकों के साथ निर्माणात्मक और योगात्मक आकलन के बारे में चर्चा शुरू करने के लिए कर सकते हैं।

गतिविधि 1: निर्माणात्मक और योगात्मक आकलन की पहचान करना

नीचे उन आकलन के अवसरों की सूची दी गई है जिनका उपयोग आपके विद्यालय की कक्षाओं में किया जा सकता है। अपनी अधिगम डायरी का उपयोग करके दो कॉलम बनाएं, एक निर्माणात्मक आकलन के लिए और दूसरा योगात्मक आकलन के लिए। अब निम्नलिखित सूची में से आकलनों को दोनों में से एक कॉलम में रखें। आप देखेंगे कि कुछ आकलन, सन्दर्भ पर निर्भर करते हुए किसी भी कॉलम में जा सकते हैं – उदाहरण के लिए कोई गीत गाना योगात्मक हो सकता है यदि वह संगीत की परीक्षा का भाग है या निर्माणात्मक यदि वह विद्यालय में अभिनय की तैयारी के लिए है।

यह एक ऐसी गतिविधि है जिसे आप अकेले कर सकते हैं, या यदि आप इसे विस्तृत करना चाहते हैं तो एक सामूहिक गतिविधि के हिस्से के रूप में अन्य लोगों को शामिल कर सकते हैं।

1. पेन और पेपर परीक्षा
2. याददाश्त से दोहराना
3. विज्ञान के किसी प्रयोग की परिकल्पना और निष्पादन करना
4. खुली पुस्तक वाली परीक्षा
5. शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का अवलोकन
6. व्यंजन विधि के अनुसार भोजन पकाना
7. निबंध
8. प्रश्नों के मौखिक उत्तर
9. प्रदर्शन
10. विद्यार्थी द्वारा तैयार किए गए गीत को गाना
11. एथलेटिक्स दौड़ में व्यक्तिगत कीर्तिमान स्थापित करना
12. किसी नाटक की रचना और अभिनय करना

परिचर्चा

कुछ कामों की पहचान निर्माणात्मक अवसर प्रदान करने वालों के रूप में आसानी से की जा सकती है जैसे विकल्प 8, जहाँ मौखिक उत्तरों के लिए तत्काल प्रतिक्रिया और चर्चा संभव होती है। अन्य काम योगात्मक जानकारी प्रदान करते हैं, जैसे विकल्प 1 में पेन और पेपर परीक्षा, जिसके अंत में एक अंतिम ग्रेड की प्राप्ति होगी।

तथापि, आकलन के प्रयोजन और प्रकृति की अधिक जानकारी के बिना, अधिकांश को श्रेणीबद्ध करना कठिन होता है। उदाहरण के लिए, पेन और पेपर परीक्षा को निर्माणात्मक ढंग से किया जा सकता है यदि उसके नतीजे विद्यार्थी को होने वाली गलतफहमियों के बारे में चर्चा को आरंभ करते हैं। इसी प्रकार, बंद प्रश्नों के लिए मौखिक उत्तरों का परिणाम एक 'स्कोर' हो सकता है जिसमें केवल शिक्षक को लाभ मिलता है। ऐसे मामले में उनका उपयोग योगात्मक रूप से होता है।

आकलन का उपयोग निर्माणात्मक ढंग से करना

आपके लिए संसाधन 1, 'प्रगति और कार्य-प्रदर्शन का आकलन करना' को पढ़ना उपयोगी होगा। आपके लिए इसे अपने शिक्षकों के साथ साझा करना तब उपयोगी हो सकता है जब आप अपने विद्यालय में आकलन की भूमिका और शैली के बारे में चर्चाएं शुरू करेंगे, और देखेंगे कि किन

पद्धतियों का उपयोग किया जा सकता है और आकलन कैसे कक्षा की एक अनिवार्य गतिविधि बन सकता है।

तो निर्माणात्मक और योगात्मक आकलन के बीच तीन मुख्य अंतर हैं:

- आकलन का प्रयोजन
- डेटा का उपयोग कैसे किया जाता है
- प्रक्रिया का स्वामी कौन है।

निर्माणात्मक आकलन में विद्यार्थियों को सहयोगी बनाने के लिए, उन्हें सक्रिय और चिंतनशील विद्यार्थी बनना होगा, और अपनी अधिगम प्रक्रिया में अगले कदम उठाने के लिए प्रतिक्रिया का उपयोग करना होगा। केस स्टडी 1 इसका एक उदाहरण देता है।

चित्र **2** कक्षा में नर्माणात्मक और योगात्मक आकलन का उपयोग करना।

केस स्टडी 1: रवि का निर्माणात्मक आकलनः

रवि एक पुस्तक के अध्याय का सारांश लिखने के लिए एक और विद्यार्थी के साथ काम करता है। बाद में वह सोचता है कि उन्हें वह काम करने में कितना समय लगा और वे दोनों कितने अव्यवस्थित थे। रवि काम के बारे में असमंजस में था और उसे पता चला कि उसने अध्याय के कुछ महत्वपूर्ण शब्दों को नहीं समझा था। अध्याय का सारांश देर से दिया गया और शिक्षक ने कहा वह बहुत छोटा था, उसमें वाक्य संरचना का अभाव था और कुछ जरूरी जानकारी छूट गई थी। तथापि, शिक्षक ने उनके प्रयास के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया, और वे इस बात पर सहमत हुए कि रवि अपने अगले सारांश में अच्छी शैली संरचना का उपयोग करेगा। रवि अब भी शर्मिंदा था, क्योंकि वह जानता था कि वह बेहतर कर सकता था, लेकिन यह पहली बार था जब उसने किसी अध्याय का सारांश लिखा था।

रवि ने इस पुस्तक के लिए एक शब्द–सूची लिखना शुरू किया क्योंकि यह स्पष्ट था कि वह कहानी के कुछ भाग को भूल रहा था और देखना चाहता था कि क्या इससे उसे मदद मिलेगी। उसने अपनी बड़ी बहन से भी उसके द्वारा लिखे गए कुछ अध्यायों के सारांश उसे दिखाने को कहा ताकि वह कुछ अच्छे उदाहरण देख सके। रवि ने अगली बार एक भिन्न सहयोगी के साथ काम करने का प्रयत्न करने का निश्चय किया जो काम के बारे में अधिक स्पष्ट था और उसने सुझाव दिया कि सारे काम को मिलकर करने की बजाय दायित्वों को आपस में बाँट लिया जाये। वह इस बारे में निश्चित नहीं था कि भ्रमित कौन था – वह या उसका सहयोगी, और इस बात की जाँच करना चाहता था।

रवि ने न केवल अपनी स्वयं की अधिगम-प्रक्रिया के बारे में सोचा, बल्कि यह भी देखना शुरू किया कि वह अगली बार कैसे बेहतर कर सकता है और अपनी अधिगम प्रक्रिया को सुधारने के लिए वह क्या कर सकता है। उसने न केवल अपने निष्कर्ष पर नज़र डाली, बल्कि यह भी देखा कि वह कैसे काम कर रहा था। उसके शिक्षक ने उसे कुछ उपयोगी प्रतिक्रिया दी (निर्माणात्मक आकलन) और उसने उसका अगली बार योजना बनाने के लिए उपयोग किया।

एक विद्यालय प्रमुख के रूप में, आप निर्माणात्मक आकलन के लिए एक संयुक्त प्रयास को प्रोत्साहित कर सकते हैं जिसके लिए आप न केवल अपने शिक्षकों बल्कि अपने विद्यार्थियों के साथ काम करके उनकी प्रक्रिया के भाग के रूप में अधिगम का आकलन करने के लाभों को देखने में उनकी मदद कर सकते हैं।

विद्यार्थियों को संलिप्त और सक्रिय विद्यार्थी बनने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, शिक्षक को सुनिश्चित करना होगा कि वे उनकी अपनी शिक्षण प्रक्रिया के प्रति सजग हैं और वे:

- गतिविधि पर चिंतन करते हैं
- जो कुछ हुआ उसका विश्लेषण करना शुरू करते हैं
- उनके अधिगम को सुधारने और अपने अनुमानों और निष्कर्षों की जाँच करने के लिए कार्यवाही करते हैं।

शिक्षकों के लिए अधिक मार्गदर्शन माध्यमिक अंग्रेजी इकाई *निर्माणात्मक आकलन के माध्यम से भाषा का समर्थन करने* में मिल सकता है।

2 कक्षा में निर्माणात्मक और योगात्मक आकलन का उपयोग करना

- केस स्टडी 2 बतलाती है कि एक विद्यालय प्रमुख, श्रीमती सिल्वा ने शिक्षक के रूप में अपने स्वयं के अनुभवों का उपयोग करते हुए अपने विद्यालय में निर्माणात्मक आकलन की शुरूआत कैसे की। उन्होंने अपने विद्यालयों में निर्माणात्मक आकलन का परिचय कराने के लिए अपने तरीके को पाँच चरणों में संरचित कियां :

1. शिक्षकों को निर्माणात्मक आकलन से परिचित कराना।
2. शिक्षकों को निर्माणात्मक आकलन के व्यावहारिक संपर्क में लाना: विद्यालय प्रमुख, श्रीमती सिल्वा द्वारा ली गई एक कक्षा का अवलोकन करना।
3. विद्यालय प्रमुख, श्रीमती सिल्वा द्वारा कक्षा को पढ़ाने के अवलोकित तरीके पर शिक्षकों के साथ चर्चा।
4. शिक्षकों का उनकी कक्षाओं में निर्माणात्मक आकलन करते समय अवलोकन करना।
5. समीक्षा और चिंतन-मनन।

केस स्टडी 2: श्रीमती सिल्वा कक्षा में निर्माणात्मक आकलन का उपयोग करती हैं

श्रीमती सिल्वा हमेशा अपनी कक्षा के हर विद्यार्थी की विभिन्न अध्यायों में प्रगति के बारे में नोट्स बनाकर निगरानी करती थीं। उन्हें अपनी कक्षा के विभिन्न विद्यार्थियों के लिए अपने पाठों को प्रासंगिक और उपयोगी बनाने में गर्व होता था और वे जानती थीं कि ऐसा करना तभी संभव है यदि उन्हें हर विद्यार्थी की उसकी पढ़ाई में स्थिति की जानकारी हो। उन्होंने समय के साथ सीख लिया था कि उन्हें यह नहीं मानना चाहिए कि सबसे अधिक शोर करने वाले विद्यार्थी ही सबसे मेधावी भी होते हैं, इसलिए उन्हें उन विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना और उन्नति करते देखना पसंद था जो चुप रहकर भी सक्षम थे।

वे किसी न किसी प्रारूप में यह रिकार्ड करने में भी विश्वास करती थीं कि विद्यार्थी अपनी गतिविधियों में क्या कर रहे हैं और हर विद्यार्थी को उसकी अधिगम-प्रक्रिया और प्रगति के बारे में प्रतिक्रिया प्रदान करती थीं। रिकॉर्डिंग और विश्लेषण के आधार पर, वे योजना बनाती थीं कि उनके विद्यार्थियों के साथ किस तरह से व्यवहार किया जाये जिससे कि उनकी अधिगम प्रक्रिया में सुधार आ सके।

विद्यालय प्रमुख के रूप में हाल में हुई उनकी पदोन्नति के साथ, श्रीमती सिल्वा चाहती हैं कि उनके तीन सहकर्मी अपने विद्यार्थियों की पूर्व शिक्षा को आगे बढ़ाएं और उन्हें जो कुछ पता चले उसे ध्यान में रखते हुए अपने अध्यापन को समायोजित करें। अपनी पद्धति के बारे में उन्होंने यह बात कही।

चरण **1:** शिक्षकों को निर्माणात्मक आकलन से परिचित कराना

जब मैंने कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया की जाँच करने और उसका उपयोग हमारी बड़ी और विविधतापूर्ण कक्षाओं में अध्यापन की मदद करने के तरीके के बारे में बोलना शुरू किया तो मुझे लगा कि कोई भी मेरी बात नहीं समझ रहा है।

शिक्षकों को अकसर यह बात करने को तत्पर पाया जाता है कि उन्हें विद्यार्थियों को पढ़ाने में कितनी कठिनाई होती है जो एक अध्याय में अलग-अलग चरण पर होते हैं, वे ये नहीं पहचान पा रहे थे कि यदि वे विद्यार्थियों की वर्तमान अधिगम-प्रक्रिया के स्तरों को स्पष्ट रूप से जान लें तो वे अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकते हैं। इसलिए मैंने निर्माणात्मक आकलन के बारे में बोलना शुरू किया, जिससे कि वे जान सकें कि विद्यार्थियों की अधिगम–पद्धति को कैसे सुधारा जा सकता है।

चरण **2:** शिक्षकों को निर्माणात्मक आकलन के व्यावहारिक संपर्क में लाना**:** विद्यालय प्रमुख द्वारा ली जा रही एक कक्षा का अवलोकन करना

मैंने देखा कि उसके बारे में बात करना उन्हें राजी करने के लिए पर्याप्त नहीं था, इसलिए मैंने उन्हें यह दिखाने के लिए कि मेरा मतलब क्या था उन्हें अपने पाठों में आमंत्रित करने का निश्चय किया। मैंने प्रेक्षकों के लिए एक गणित का पाठ और एक भाषा का पाठ खोला। मैंने उनसे पाठ में किए जा रहे आकलन के विभिन्न तरीकों और वह कितनी बार किया जा रहा था इस बात के नोट्स बनाने को कहा। मैंने सुझाया कि इसमें मैं विद्यार्थियों का आकलन करती हो सकती हूँ, या विद्यार्थी स्वयं या एक दूसरे का आकलन करते हो सकते हैं। मैंने शिक्षकों को देखने को कहा कि आकलनों को कैसे रिकार्ड किया (या नहीं किया) जाता है, और मैंने अपने अध्यापन को प्रभावित करने के लिए आकलन का कैसे उपयोग किया; उदाहरण के लिए, मैंने कैसे प्रश्न पूछे, मैंने क्या टिप्पणियाँ कीं और मैंने किन उदाहरणों का उपयोग किया।

मैंने इस बात पर भी जोर दिया कि यह महत्वपूर्ण है कि वे उन टिप्पणियों को भी लिखें जो मैंने विद्यार्थियों की मदद करने के लिए तब की जब वे अटक रहे थे, और मैंने विद्यार्थियों को समय-समय पर प्रतिक्रिया कैसे दी। यह उन्हें ये समझाने के लिए किया गया कि विद्यार्थियों को इस तरह से तत्काल प्रतिक्रिया देना कितना जरूरी और महत्वपूर्ण होता है ताकि विद्यार्थी जो कुछ कर रहे हों उसमें सुधार कर सकें।

चरण **3:** विद्यालय प्रमुख द्वारा कक्षा में अवलोकित अध्यापन पर शिक्षकों के साथ चर्चा

हमने एक बैठक की जिसमें हमने किए जा रहे अधिगम और अध्यापन के भाग के रूप में विद्यार्थियों का आकलन करने के मेरे तरीके पर चर्चा की। कुछ चीजें जिनसे शिक्षक आश्चर्यचकित हुए थे वे ये थीं कि मैंने एक विद्यार्थीा से जोड़ी में कार्य के दौरान अपने सहयोगी का आकलन करने को कहा था और समूहकार्य के दौरान मैंने समूहों से, शिक्षक के रूप में मेरी भूमिका लेते हुए, एक दूसरे का आकलन करने और प्रतिक्रिया देने को कहा था।

चर्चा आगे बढ़कर प्रश्नों की एक सूची में बदल गई जो वे अपनी खुद की कक्षाओं में विद्यार्थियों की अधिगम-प्रक्रिया का आकलन करने के लिए पूछ सकते थे। मैं चाहती थी कि ये प्रश्न एक मददगार ढंग से पूछे जाएं और इस तरह से नहीं कि विद्यार्थी तनावग्रस्त हो जायें या समझें कि कोई पूछताछ कर रहा है। यदि विद्यार्थी उत्तर न दे सके, तो प्रश्नों को दूसरे विद्यार्थी से पूँछना चाहिए और नोट करना चाहिए कि कौन सी बात उन्हें समझ में नहीं आई है।

चरण **4:** शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में निर्माणात्मक आकलन का उपयोग करते देखना

मैंने उनसे मुझे एक महीने की अवधि में एक पाठ को स्वयं देखने के लिए आने का निमंत्रण देने को कहा। उन्हें अपने विकल्पों का अभ्यास करने के लिए समय की जरूरत थी। मैंने उन्हें सूचित किया कि मैं अपने अभिमतों को नोट करूँगी क्योंकि इतनी सारी कक्षाओं में हो रही हर बात तो याद रखना मेरे लिए संभव नहीं होगा। मेरे अवलोकनों के दौरान मुझे शिक्षकों को ऐसे प्रश्नों का उपयोग करते देखकर खुशी हुई जो विद्यार्थियों को सोचने के लिए प्रेरित करते थे और शिक्षक यह जान पा रहे थे कि विद्यार्थियों को क्या समझ में आया था। मैंने यह भी देखा कि विद्यार्थियों के अटकने पर वे सहायतापूर्ण प्रतिक्रिया भी दे रहे थे। विद्यार्थियों की इसमें दिलचस्पी नज़र आ रही थी और वे अधिकांश कक्षाओं में उत्तर देने के लिए तैयार थे।

चरण 5: समीक्षा और चिंतन-मनन

निरीक्षणों/अवलोकनों के बाद हम अपनी प्रारंभिक सूचियों पर लौटे और उन्हें संशोधित करते हुए उनमें कुछ और प्रश्न जोड़े। अपने विद्यालय के सभी शिक्षकों के साथ इस बातचीत के दौरान, हमने:

- उनके सामने आ रही समस्याओं पर चर्चा की
- अनुभवों को साझा किया कि उन्होंने अपनी कक्षाओं में कौन सा आकलन कैसे किया, और मोटे तौर पर तय किया कि विद्यार्थियों की मदद करने के लिए क्या करने की जरूरत है
- उनकी वैयक्तिक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की योजनाओं को संशोधित किया
- नई योजनाओं को एक दूसरे के साथ साझा किया।

एक शिक्षक, श्रीमती मेहता ने चर्चाओं के दौरान एक विकल्पों को साझा किया जिसका उपयोग फिर कई शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं में किया। श्रीमती मेहता ने हमें बताया कि उन्होंने अपने विद्यार्थियों के त्वरित आकलन के लिए अपनी गणित की कक्षा में एक खुशनुमा तरीके का उपयोग किया था। विद्यार्थी यदि किसी अवधारणा को समझने में कठिनाई महसूस करते तो खुला हाथ उठाते थे और यदि उन्हें विश्वास होता कि वे उसे समझ गए हैं तो बंद मुट्ठी उठाते थे। वे इस आकलन का उपयोग पाठ के दौरान कभी भी अपने शिक्षण को धीमा करने या अगले चरण में आगे बढ़ने के लिए कर सकती थीं। विद्यार्थियों ने हाथ को खोलने और बंद करने के एक अतिरिक्त संकेत की माँग की थी ताकि वे बता सकें कि वे करीब-करीब समझ गए हैं! हममें से कई लोग अब इस तकनीक का उपयोग करते हैं और विद्यार्थी कभी-कभी बिना पूछे ही खुलता-बंद होता या खुला हाथ उठा देते हैं।

श्रीमती मेहता का विकल्प उनके विद्यार्थियों को उन्हें यह बताने का एक त्वरित और उपयोगी तरीका था कि उन्होंने अपने काम को समझा है या नहीं। तथापि, आपको एक प्रमुख के रूप में कुछ बातों के लिए देखना होगा ताकि आप सुनिश्चित कर सकें कि इस तरीके का उपयोग निर्माणात्मक ढंग से किया जा रहा है:

- क्या विद्यार्थी जानते हैं कि उनके काम का क्या उद्देश्य है? क्या उनके पास यह परखने के लिए मापदंड हैं कि वे कितने सफल हैं? श्रीमती मेहता के मामले में, हो सकता है उन्होंने उन कौशलों को ब्लैकबोर्ड पर लिस्ट किया होगा जिन्हें अधिगम जरूरत उनके विद्यार्थियों को थी, या उन्हें कोई जटिल प्रश्न दिया होगा जिसे हल करने के लिए उन्हें उनके द्वारा सीखे जा रहे गणित की अच्छी समझ की जरूरत थी। विद्यार्थी तब निर्णय कर सकते थे कि क्या वे कौशलों का उपयोग कर सकते हैं या समस्या को हल कर सकते हैं।
- आकलन के परिणाम के रूप में क्या हुआ? आकलन तब केवल निर्माणात्मक होता है जब उसके बाद की जाने वाली अधिगम गतिविधि को उस बात को ध्यान में रखते हुए संशोधित किया जाता है जिसे आकलन ने दर्शाया था। श्रीमती मेहता जब देखती थीं कि विद्यार्थी समझ नहीं पा रहे हैं तो वे अध्यापन को मंद कर देती थीं, लेकिन कभी-कभी शिक्षकों के पास ऐसी कई विकल्पों का होना आवश्यक होता है जिनसे प्रत्येक विद्यार्थी प्रगति करना जारी रख सके।

3 आपके विद्यालय में आकलन पद्धति का अभ्यास

विद्यार्थियों को *सीखने के कौशलों* के लिए इन आकलनों का विकास करने में समर्थन की जरूरत पड़ती है। ऐसा करने के लिए, विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों को:

- अधिगम हेतु आकलन के सिद्धांतों को समझना चाहिए
- जानना चाहिए कि इन कौशलों को कैसे कक्षा की गतिविधियों के माध्यम से विकसित करना चाहिए, और ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों को प्रतिक्रिया देने और अध्यापन और अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी ढंग से नियोजित करने में मदद करने के लिए अवसर कैसे प्रदान कर सकती हैं।

विद्यालय में आकलन में बदलाव को लागू करने से पहले, यह समझना सदैव आवश्यक होता है कि वर्तमान में क्या हो रहा है और आकलन के प्रति शिक्षकों का क्या दृष्टिकोण है। अगली गतिविधि का उद्देश्य यह पता लगाने में आपकी मदद करना है कि आपके विद्यालय के पाठों में किस प्रकार का आकलन हो रहा है ताकि आप शिक्षकों को कक्षा में आकलन करने के लिए सृजनात्मक रणनीतियों को अपनाने में शिक्षकों को सक्षम कर सकें।

गतिविधि 2: अपने विद्यालय में आकलन की पद्धति पर दृष्टि डालना

अधिकतम पाँच शिक्षकों से उस एक आकलन कार्य का वर्णन करने को कहें जिसका उपयोग उन्होंने उस सप्ताह किया है। उनसे पूछें कि उन्होंने विद्यार्थियों के बारे में आकलन से क्या सीखा और विद्यार्थियों ने उससे क्या सीखा।

यह पता लगाने के लिए कि निर्माणात्मक आकलन का उपयोग किस सीमा तक किया जा रहा है, आप चाहें तो उनसे इस बात के उदाहरण देने को कह सकते हैं जहाँ उन्होंने विद्यार्थियों को तत्काल आकलन प्रतिक्रिया दी थी या विद्यार्थियों के सीखने में सुधार करने के लिए मदद करने के लिए सीखने के काम को बदला था। इससे आपको यह निर्धारित करने में मदद मिलेगी कि आपके शिक्षक निर्माणात्मक आकलन का उपयोग उसके बारे में अनभिज्ञ होकर कर रहे हैं या नहीं।

ये सब वार्तालाप कर लेने के बाद, अपनी अधिगम डायरी में उत्तरों को नोट करते हुए, निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें:

- किस प्रकार के आकलन सबसे अधिक सामान्य महसूस होते हैं?
- क्या इस बात का प्रमाण है कि निर्माणात्मक आकलन संपन्न हो रहा है? यदि हाँ, तो उदाहरण दें।
- क्या शिक्षक विद्यार्थियों की आकलन प्रतिक्रिया से अधिगम स्पष्ट इच्छा को व्यक्त करते हैं? दूसरे शब्दों में, क्या वे अधिगम के लिए आकलन की भूमिका या अधिगम के आकलन की भूमिका को समझते हैं?

  आप अपने साथ उनके द्वारा चर्चित आकलनों को निर्माणात्मक बनाने के लिए उनके प्रयोजन या उपयोग को बदलने का सुझाव कैसे दे सकते हैं?

परिचर्चा

आपके विद्यालय के शिक्षकों की पृष्ठभूमि और स्टाफ द्वारा पाठ्यक्रम की व्याख्या करने के तरीके पर निर्भर करते हुए, आकलन के एक या दूसरे प्रकार पर अधिक जोर दिया जा सकता है। आपके लिए यह जानना भी आवश्यक है कि उनके उत्तर कुछ हद तक उस बात को प्रतिबिंबित करेंगे जिसकी उनके विचार से आपको अपेक्षा है।

आपको पता लग सकता है कि अच्छी पद्धति के उदाहरण के रूप में आपके द्वारा प्रयुक्त पाठ्यक्रम के कुछ हिस्सों में पहले से ही कुछ उत्कृष्ट अभ्यास दिया गया है। आप चाहें तो इस गतिविधि के बाद स्टाफ की बैठक कर सकते हैं जिसमें आप आकलन से होने वाली शिक्षण की संभावनाओं पर जोर दे सकते हैं और आपके द्वारा खोजे गये निर्माणात्मक आकलन के उपयुक्त उपयोग की ओर ध्यान खींच सकते हैं। आप विद्यालय के इर्दगिर्द अपनी चहलकदमियों के दौरान आकलन पर ध्यान देने का निश्चय कर सकते हैं ताकि आप अच्छी विधियों की पहचान कर सकें और उन कर्मचारियों की सहायता कर सकें जिन्हें अतिरिक्त मदद चाहिए।

आप चाहें तो शिक्षकों के छोटे समूहों के साथ नज़दीकी से काम करके नियमित निर्माणात्मक आकलन के अवसर स्थापित करने में उनकी मदद कर सकते हैं।

विद्यार्थियों को शामिल करें

स्टाफ का दृष्टिकोण और आकलन पर उनके विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं तथापि, वे सफलता का केवल एक हिस्सा हैं। विद्यालय में निर्माणात्मक आकलन के सफल कार्यान्वयन के मूल में दो प्रश्न हैं:

1. क्या शिक्षकों को आकलन के अवसरों से विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से सीखने में मदद करने के लिए जरूरी जानकारी प्राप्त हो रही है?
2. क्या विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से सीखने और अपनी योग्यताओं का विकास करने के लिए आवश्यक फीडबैक प्राप्त हो रही है?

यह महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों से उनके निर्माणात्मक आकलन के अनुभवों के बारे में पूछने और यह जानने के लिए समय दिया जाये कि क्या वे सुझाव दे सकते हैं कि आकलनों और फीडबैक को कैसे सुधारा जा सकता है। विद्यार्थियों को शामिल करना प्रत्येक आकलन के अवसर में सन्निहित होना चाहिए, ताकि शिक्षक समझ सकें कि विद्यार्थियों ने आकलन से क्या फायदा हुआ है और उनके सीखने के लिए आवश्यक अगले कदमों की संयुक्त रूप से पहचान कर सकें। इस तरह, आकलन व्यक्ति से संबंधित हो जाता है, जिसे विभेदित आकलन भी कहते हैं। आपको अपनी टीम के साथ साझा करने के लिए संसाधन 2, fनगरानी करना और फीडबैक देना', उपयोगी लग सकता है।

4 अधिगम लक्ष्य

निर्माणात्मक आकलन तभी प्रभावी होता है जब शिक्षक जानते हैं कि विद्यार्थी किस ओर जा रहे हैं। एक मुखिया होने के नाते, यह सुनिश्चित करना आपका दायित्व है कि शिक्षकों के पास शैक्षणिक वर्ष के अंत में, पाठों के क्रम की समाप्ति और किसी विशिष्ट गतिविधि को पूरा करने के लक्ष्य हैं।

शिक्षकों की निर्माणात्मक आकलन का उपयोग विकसित करने में मदद करने में विद्यार्थियों के लिए लघु, मध्यम और दीर्घावधि में स्पष्ट लक्ष्य आवश्यक हैं। गतिविधि 3 इस गतिविधि के बारे में यह सोचने में मदद करेगी कि आप मुल्यांकन मापदण्ड (रुब्रिक) को साधन के रूप में उपयोग करते हुए ऐसा करने में शिक्षकों की सहायता कैसे कर सकते हैं। संसाधन 3 योग्यता के विभिन्न स्तरों का आकलन करने के लिए रुब्रिक लिखने पर कुछ मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। तालिका 1 और 2 दो विषम रुब्रिकों के उदाहरण हैं जो विभिन्न स्तरों पर और विभिन्न मापदंडों के समक्ष आकलन करते हैं।

*तालिका **1** पूर्व माध्यमिक एवं माध्यमिक का विवेचनात्मक ढंग से सोचने वाला रुब्रिक। (स्रोतः बौद्धिक ग्रहण, दिनांक रहित)*

क्र. सं.	निष्पादन के स्तर	विचार : एक व्याख्या उत्पन्न करना	प्रमाण : पाठ के समर्थन का उपयोग	प्रतिक्रिया : के साथ और अन्य विद्यार्थियों से सीख
7.	व्याख्या विस्तार	एक पूरे रूप में पाठ की व्याख्या करने के लिए विचार विस्तार ● विषयों, मुद्दों और लेखक के परिप्रेक्ष्य को पहचानना ● सवाल से परे चले जाना, चर्चा के अन्तर्गत मुद्दों का विस्तार	पूरे पाठ से सबूब साथ लाता है ● प्रमुख घटनाओं और सूक्ष्म विवरणों का उपयोग करता है ● प्रमाणों की तुलना और वजन (Weigth)	अन्य विद्यार्थियों के विचारों को प्रकट करना चाहता है ● अन्य विद्यार्थियों के विचारों को स्पष्ट करने हेतु प्रश्न पूछता है तथा संभावनाओं का सुझाव देता है। ● अन्य विचारों के लिए समर्थन का सुझाव
6.	व्याख्या बताता है	खुद के विचार पर प्रकाश डालता है ● शब्दों को परिभाषित करता है तथा उपयोग ढूंढता है। ● विसंगतियों का निराकरण	कई अलग–2 तरीकों से मामला बताना है ● सोंच की प्रक्रिया की रचना ● चर्चा के दौरान सबूत जोड़ना	अन्य विद्यार्थियों के विचारों और सबूत शामिल करता है ● विशिष्ट भागों से असहमत या सहमत होता है ● पूरी चर्चा के बाद
5.	जवाब समझाना	किस प्रकार एक विचार सवाल का जवाब बनाते हैं, समझाता है – ● कार्यों और विशेषताओं को एक दूसरे से सम्बंधित करता है। ● स्पष्ट करने के लिए अपनी मान्यताओं, प्रश्न से संबंधित करना	एक अंश कैसे विचारों का समर्थन करता है। ● वाक्य व मुहावरे के लिए सार्थक शब्दों की खोज। ● देखें जब सबूत खुद के विचार के खिलाफ काम करता है	स्हमति और असहमति के लिए कारण देता है ● अन्य विद्यार्थियों के विचारों का समर्थन या आलोचना करता है ● अन्य विद्यार्थियों से सरल सवाल पूछते हैं
4.	मुद्दों को समझता है	व्याख्यात्मक मुद्दों को पूरी तरह से समझता है ● परिणाम और कारण को समझता है, प्रश्नों का सीधा उत्तर देता है। ● स्पष्ट करने के लिए जवाब के बारे में गहराई से बताना	सबूत की जरूरत को समझता है ● अकस्मात दोबारा पाठ को देखना है। ● सार्थक वाक्यों पर संकेन्द्रण करता है।	समझता है और मोटे तौर पर अन्य विद्यार्थियों के विचारों का सार बताता है ● दूसरे से सहमत हो सकता है ● दूसरो के तर्कों का मुकाबला प्रकार है
3.	विकल्प पहचानना	वैकल्पिक विचारों को जानकर उचित जवाब को जोर देता है। ● जवाब के बीच में संकोच हो सकता है ● स्पष्ट करने के लिए सविस्तार जवाब	टपने जवाब का अन्य विकल्पों के खिलाफ जवाब का समर्थन करता है। ● प्रासंगिक प्रमुख अंश को रेखांकित करता है। ● पूर्ण अंश को पढ़ता है।	वैकल्पिक उत्तरों की पहचान कर उनसे सहमत हैं या असहमत नहीं हैं, बताता है।
2.	सरल त्वरित उत्तर प्रदान करता है	प्रश्न के तुरन्त और आसान उत्तर देना ● सभी या कुछ भी नहीं– तसवीर या निर्णय ● स्पष्ट करने के लिए जवाब दोहराना	स्वयं समर्थन नहीं देता, केवल पूछे जाने पर समर्थन प्रदान करता है ● प्रमुख पाठ तथ्यों को बताता हैं ● स्वयं स्पष्ट जवाब समझते हैं	थ्बना उनके बारे में बात करके अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों पर संक्षित/जल्दी के प्रतिक्रिया करता है
1.	उत्तर की शुरूआत	सवाल पर बोले बिना पाठ के बारे में कहना।	कहानी या घटना को दोबारा कह सकना या पाठ में उल्लिखित अंश पर विचार देना।	दूसरों को दखल के बिना बात करने की अनुमति देता है

तालिका 2 आर्ट रुब्रिक एलीमेंटरी ग्रेड लेवल। (स्त्रोत: वालेरी बर्जर, दि.रहित)

श्रेणी	विशेषज्ञ	सक्षम	आरम्भकर्ता	सुधार की आवश्यकता
शिल्प कौशल	आकार नियोजित और संतुलित है। किनारे परिष्कृत और चिकने हैं। दीवारें मोटी हैं। जोड़ संरक्षित है और छुपा हुआ है। सभी सतहों को खुरदरेपन के बिना चिकनी कर रहे हैं।	आकार कुछ हद तक नियोजित हैं और थोड़ा विषम है। अधिकांश किनारे परिस्कृत और चिकने हैं। दीवारें न्यूनतम खुरदरेपन के साथ मोटी भी हैं। जोड़ सुरक्षित और छुपे हुए हैं। अधिकांश सतह बिना दानों के चिकनी हैं।	आकार अनियोजित है और संतुलन का अभाव है। कुछ किनारे चिकने हैं लेकिन कई अपरिस्कृत हैं। जोड़ सुरक्षित लेकिन स्पष्ट है। दीवारें सतह कुछ खुरदरेपन के साथ ज्यादातर चिकनी है। कुछ के साथ मोटाई में भिन्नता है लेकिन कुछ खुरदुरी स्पष्ट है।	आकार में योजना और प्रयास का अभाव है। सतहों की मोटाई असमान है। जोड़ असुरक्षित है। सतहें और किनारे अपरिस्कृत हैं।
सृजनात्मकता	डिजाइन अद्वितीय है और प्रदर्शित तत्व पूरी तरह से उनके अपने हैं। विस्तृत, पैटर्न या अद्वितीय अनुप्रयोगों के साक्ष्य।	डिजाइन अर्थपूर्ण है, कुछ अद्वितीय विशेषतायें हैं। कुछ हद तक विस्तार किया हुआ है।	डिजाइन में वैयक्तिकता का अभाव है। कुछ जानकारी हैं या आकार के लिए उपयुक्त नहीं है। विचारों का नकल करने के साक्ष्य।	कई डिजाइन अवयवों या रूचि का अभाव/न्यूनतम अतिरिक्त लक्षण या दूसरों के विचारों की नकल का अभाव/वैयक्तिकता के लिए बहुत ज्यादा प्रयास नहीं दिखाया।
उत्पादन/प्रयास	कक्षा समय का अधिकतम उपयोग करता है। काम में हमेशा समय लगाना और अच्छे प्रयास झलकते हैं	काम के लिए कक्षा के समय का उपयोग करता है लेकिन कभी–कभी दूसरों से विचलित होता है। कार्य उत्कृष्ता से कम पड़ता है।	कठिनाई से परियोजना पर ध्यान केन्द्रित किया है। दूसरों से आसानी से विचलित होता है।	शायद ही काम की गुणवत्ता का खयाल रखा। कार्य पूरा करने में कोई अतिरिक्त प्रयास नहीं दिखता।
काम की आदतें/अभिवृत्ति	सकारात्मक सुझावों के लिए खुला और उन्हें सम्मान देता है। कार्य क्षेत्र अच्छी तरह से साफ रखता हैं।	सुझावों को स्वीकार करता है और उन्हें सम्मान देता है। ज्यादातर समय कार्यक्षेत्र साफ रखता है।	सुधार हेतु सुझाव के लिए खुलेपन का अभाव है। सफाई के काम के लिए कठिनाई होना।	दूसरों के लिए सफाई छोड़ देता है। एक रवैया है और सुझावों द्वारा सहायकता के लिए खुला नहीं है। सुझावों से कोई सहायता लेने का रवैया नहीं रखता।

गतिविधि 3: सीखने के लक्ष्यों को स्थापित करने में शिक्षकों का समर्थन करना

निम्नलिखित संवाद में, विद्यालय प्रमुख नाटक के प्रारूप में लेखन के कौशल का आकलन करने के लिए एक रुब्रिक बनाने में एक शिक्षक की सहायता करने के लिए उसके साथ काम कर रहे हैं। इसे पढ़ते समय, अपनी अधिगम डायरी में नोट करें कि विद्यालय प्रमुख शिक्षक को यह बताने से कैसे बचता है कि क्या करना है, ताकि वह शिक्षक खुद अपने लिए सोचने में सक्षम हो सके।

शिक्षक	मैंने विद्यार्थियों से, परिवेश और कलाकारों तथा किरदारों से शुरू करते हुए, कहानी को नाटक में बदलने को कहा है। मैं मंच के निर्देशों का एक चार्ट बना रही हूँ और उसे ब्लैकबोर्ड पर लगा रही हूँ जिनका वे उपयोग कर सकते हैं। मैं इस बारे में निश्चित नहीं हूँ कि जो कार्य मैंने उन्हें दिया है उसके लिए मैं रुब्रिक का कैसे बनाऊंगी।
विद्यालय प्रमुख	अच्छा, शुरू करने के लिए उन विन्दुओं की पहचान करनी होगी जिनका विद्यार्थियों से नाटक लिखवाकर आप उनकों किस चीज में सक्षम होने का प्रदर्शन करवाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, क्या आप चाहते हैं कि वे आपके चार्ट पर दिए गए सभी मंच निर्देशों का उपयोग करें?

शिक्षक	क्या आप सोचते हैं, कि वे ऐसा कर सकेंगे?
विद्यालय प्रमुख	यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप चार्ट पर कितने निर्देश दे रहे हैं और नाटक लिखने में उनका उपयोग सामान्य तौर पर कितनी बार किया जाता है।
शिक्षक	उनमें से अधिकांश का उपयोग कई बार किया जाता है। मैंने डिस्प्ले बोर्ड पर आठ मंच निर्देश दिए हैं। दो आसान हैं, 'बाहर जाता है' और 'प्रवेश करता है', और कठिन निर्देश हैं 'ऑफस्टेज से', 'डाउनस्टेज जाना', 'सेंटर स्टेज से बोलना' ...
विद्यालय प्रमुख	तो जो छात्र अपने नाटक के कथानक में सभी मंच निर्देशों का उपयोग करता है उसे पता होना चाहिए कि उनका उपयोग क्यों किया जाना है और उनके उपयोग किए जाने के पीछे कोई कारण है?
शिक्षक	हाँ, मैंने उन पर कक्षा में चर्चा की है जब वे अपने नाटक प्रस्तुत कर रहे थे, ताकि कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय वे थियेटर के कौशल के बारे में भी सीखें। मेरा खयाल है जब हम वार्षिक दिवस मनाएंगे तब इससे मदद मिलेगी।
विद्यालय प्रमुख	अब मुझे समझ में आया कि आपकी कक्षा के छात्र एसेम्बली में हमेशा क्यों अच्छी तरह से पेश आते हैं। अब मैं सोचती हूँ कि क्या जो विद्यार्थी सभी आठ मंच निर्देशों का उपयुक्त ढंग से उपयोग करता है उसे उत्कृष्ट के रूप में ग्रेड दिया जा सकता है?
शिक्षक	ना, मेरा खयाल है यदि वे प्रदर्शित किए गए मंच निर्देशों से अधिक निर्देशों का उपयोग करते हैं तो वे उत्कृष्ट कहलाएंगे। मैं आपका मतलब समझ रही हूँ। तो मैं कहूँगी कि यदि केवल दो मंच–निर्देशों का उपयोग किया गया तो छात्र पर ध्यान देने की जरूरत होगी। ए-ग्रेड छात्र वह होगा जो सभी आठों प्रदर्शित निर्देशों का उपयोग करेगा। मेरा अनुमान है छह निर्देशों का उपयोग औसत कहलाएगा, और एक संतोषजनक सी उन विद्यार्थियों को दिया जाएगा जिनके कथानकों में चार मंच निर्देश शामिल होंगे।
विद्यालय प्रमुख	हमें उपयुक्तता को नहीं भूलना चाहिए। इसलिए मैं कहूँगी कि 'उत्कृष्ट' ग्रेड का मतलब यह भी है कि सभी निर्देशों का उपयोग उपयुक्त तरीके से किया जाता है।
शिक्षक	ठीक है, मुझे इस पर विचार करने और फिर आपके पास लौटने का अवसर दें। मेरे मन में कुछ मापदण्ड हैं।

परिचर्चा

आपने नोट किया होगा कि विद्यालय प्रमुख के प्रश्न शिक्षक की उसके आकलन के बारे में सोचने में मदद कर रहे हैं। वे वहाँ से अधिक स्पष्टता और अधिक मापदंडों वाले आकलन रुब्रिक का निर्माण करने की इच्छा के साथ जाती हैं।

इस शिक्षक की विकसित होती समझ के लिए महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने जो मापदंड उपयोग किए हैं (प्रयुक्त मंच–निर्देशों की संख्या) वे निर्माणात्मक आकलन नहीं हैं। यदि उन्होंने केवल अपने प्रारंभिक मापदंडों (मंच निर्देशों की संख्या = ग्रेड) का उपयोग किया होता, तब इस बात की संभावना नहीं थी कि वे अधिक मंच निर्देशों का उपयोग करने के अलावा, विद्यार्थियों की शिक्षण-प्रक्रिया को सुधारने के लिए प्रभावी निर्माणात्मक प्रतिक्रिया प्रदान कर पातीं।

काम के अन्य पहलुओं में मापदंड जोड़कर (उदा. मंच निर्देशों का उपयुक्त उपयोग), शिक्षक या छात्र स्वयं शिक्षण-प्रक्रिया का आकलन कर सकते हैं, बजाय इसके कि विद्यार्थियों को शिक्षण-प्रक्रिया का आकलन करने के लिए प्रेरित किया जाये।

सीखने के लिए आकलन में सहायक मापदंडों का उपयोग करने के लिए शिक्षकों को आगे बढ़ने में मदद करने के लिए समय की जरूरत होती है: न केवल अवधारणा को समझने, आकलन के अवसरों का नियोजन करने और रुब्रिक्स का विकास करने के लिए (जहाँ आकलन के मापदंड निष्पादन से जुड़े होते हैं), बल्कि कक्षा में एक अलग प्रकार के संवाद का विकास करने के लिए भी। यह संवाद शिक्षण-प्रक्रिया और अधिगम के लिए अगले कदमों पर चर्चा करने के लिए रुब्रिक का उपयोग करते हुए शिक्षक और छात्र के बीच हो सकता है, बल्कि स्व- या समकक्ष-आकलन में लगे विद्यार्थियों को भी उनकी अपनी शिक्षण-प्रक्रिया को समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करने के लिए शामिल कर सकता है।

चित्र **3** दो–दो की जोड़ियों में काम करना।

यदि आपने पहले कभी रुब्रिक का उपयोग नहीं किया है, तो संसाधन 3 में दिए गए मार्गदर्शन को देखकर समझें कि विद्यार्थियों ने ज्ञान और कौशलों के इर्द-गिर्द मापदंडों को कैसे पूरा किया है इसका आकलन करने वाले रुब्रिक को कैसे लिखा और उपयोग में लाया जाता है। आप अपने शिक्षकों को इस पद्धति को अपनाने के लिए प्रोत्साहन देने के लिए उनके उपयोग हेतु एक टेम्प्लेट विकसित कर सकते हैं।

गतिविधि 4: रुब्रिक का उपयोग करने का एक उदाहरण

नीचे एक चिह्नित आबंटन और आकलन रुब्रिक का उपयोग करते हुए शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद का उदाहरण प्रस्तुत है। पढ़ते समय, शिक्षक विद्यार्थी के सीखने में सहायता करने के लिए जो कुछ करता है अपनी अधिगम डायरी में उसके नोट्स बनाएं। कल्पना करें कि यह वह संवाद है जिसे आप अपने विद्यालय में देखते हैं और सोचें कि शिक्षक को आप क्या प्रतिक्रिया देंगे।

शिक्षक	यह आपकी उत्तर शीट है – पिछले आकलन के बाद से आपका ग्रेड सुधर गया है। इस पर एक नज़र डालें और मुझे बताएं कि क्या आप देख सकते हैं कि आपने क्या अच्छा किया है और कहाँ आपको और सुधार करने की जरूरत है।
विद्यार्थी	मैं A पाना चाहता था। आपने मुझे B + दिया है। यह मुझे ठीक नहीं लगता! मैंने हर चीज का उत्तर दिया है। मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मुझसे कहाँ गलती हुई है।
शिक्षक	चलिए एक बार हम मिलकर रुब्रिक को देखते हैं। रानी लक्ष्मीबाई के निर्णय के लिए कारणों के क्रम के विषय में दूसरा मापदंड।
विद्यार्थी	ओह, मेरे अनुसार यही सही क्रम है!
शिक्षक	मैं समझता हूँ कि आपको लगता है कि आपके अनुसार आपका क्रम ही सही है। इतिहास में हमें अकसर अपने दायरे से बाहर निकलकर उन लोगों के दृष्टिकोण पर विचार करना होता है जो निर्णय लेते हैं। अब हम देखते हैं – आप यह क्यों सोचते हैं कि आपको तत्काल कारण से शुरू करना चाहिए और फिर उन कारणों पर चर्चा करनी चाहिए जिनकी वजह से संघर्ष हुआ।
विद्यार्थी	वास्तव में तत्काल कारण आम तौर पर महत्वहीन होता है। आप जानते हैं कि वर्षों से किए जा रहे अन्यायपूर्ण निर्णयों से वे नाराज़ थे और उन्होंने गोलियों के बारे में अफवाहों का उपयोग एक बहाने के रूप में किया।
शिक्षक	आप वाकई में परेशान हैं लेकिन आप सीधा-सीधा सोच रहे हैं! आपका अनुमान बिल्कुल सही है! इसलिए जब आप तत्कालीन कारण से शुरू करते हैं तो आप एक तरह से बहाने को महत्व दे रहे होते हैं। फिर आप व्यवस्थित ढंग से उन कारणों की तलाश करते हैं जो समय के साथ एकत्र हो रहे थे। यदि आप इस मामले में आठ कारणों पर नज़र डालते हैं, तो आप एक अनुक्रम की पहचान कर सकते हैं जो उनमें से एक को सबसे महत्वपूर्ण कारण बनाता है।
विद्यार्थी	अब मैं आपका मतलब समझ रहा हूँ। तो मुझे कारणों का अनुक्रम बनाने के तरीके के बारे में सावधान रहना चाहिए

	और मेरे पास अनुक्रम बनाने का भी औचित्य होना चाहिए!
शिक्षक	बिल्कुल। यदि आप ऐसा करते हैं तो अगले सप्ताह के आकलन में आपको A न देने का मेरे पास कोई कारण नहीं होगा। आपने इसे वाकई में अच्छी तरह से लिखा है।
विद्यार्थी	बहुत-बहुत धन्यवाद! यदि मैं इन उत्तरों को अधिक विचारपूर्ण क्रम में लिखूँ, तो क्या आप कृपा करके उन पर एक नज़र डालेंगे?
शिक्षक	अवश्य! उन्हें घर पर करें, और कल मुझे दिखाएं।
विद्यार्थी	फिर से धन्यवाद, यह बात वाकई में उपयोगी थी!

परिचर्चा

यह संवाद तब शुरू होता है जब एक ग्रेड दिया जा चुका होता है। विद्यार्थी बात का आरंभ प्रतिरक्षक ढंग से और नाराज़गी के साथ करता है। ग्रेडस से ऐसा प्रभाव होना संभव है: यदि सुधार के बारे में चर्चा करने के बाद ग्रेड प्रदान किया गया होता, तो विद्यार्थी काफी अधिक ग्रहणशील होता। जैसा कि देखा जा सकता है, विद्यार्थी सुधार करने के लिए उत्सुक है। सत्र के उक्त तल रूब्रिक का अधिक उपयोग करके वह उस समय तक स्वय ही पहुँच चुका है और उसे पता चल चुका है कि क्या करने की आवश्यकता है। वार्तालाप में रुब्रिक में स्पष्ट रूप से दिए गए मापदंडों का उपयोग किया गया है जो स्पष्ट करते हैं कि विद्यार्थी ने क्या हासिल किया है और उसे प्रगति करने के लिए क्या करना चाहिए। ग्रेडों पर किसी चर्चा की कोई जरूरत नहीं थी। इसकी बजाय, क्या हासिल किया गया और कितना अधिक हासिल किया जा सकता है इस विषय में संवाद हर विद्यार्थी को बिना असफल महसूस किए प्रगति करने में सक्षम करेगा।

अन्य शिक्षकों की इस तरह से अधिगम प्रक्रिया पर चर्चा करने की क्षमता विकसित करने में समर्थन करने के लिए सावधानी से योजना बनाना आवश्यक होता है। आप प्रभावी विधियों का प्रतिमान बनाने के अवसरों पर विचार कर सकते हैं, जैसे शिक्षकों से अपने स्वयं के केस स्टडी विकसित और साझा करने को कहना, या पाठों का अवलोकन करना और प्रभावी निर्माणात्मक प्रतिक्रिया की प्रशंसा करना।

आप चाहें तो इस बात पर भी विचार कर सकते हैं कि निर्माणात्मक आकलन में संलग्न होने के लिए आप विद्यार्थियों की कैसे सहायता कर सकते हैं – आपने नोट किया होगा कि इस विद्यार्थी ने शुरू में केवल ग्रेड देखा और कैसे सुधार करना है इस बात पर चर्चा करने में संलग्न नहीं होना चाहता था। जब निर्माणात्मक आकलन कक्षा में नियम बन जाता है, तो विद्यार्थी संलग्न होंगे और अधिक स्वावलंबी शिक्षार्थी बनेंगे।

5 विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी करने के लिए आकलन डेटा का उपयोग करना

विद्यार्थियों को संपूर्ण रूप से विकसित होने में सहायता करने के साथ-साथ, शिक्षण-प्रक्रिया का आकलन शिक्षकों को विद्यार्थियों की प्रगति के बारे में नियमित रूप से आकलन डेटा एकत्र करने का अवसर देता है। इसके परिणामस्वरूप अधिक वैयक्तिकृत और लक्षित गतिविधियाँ और विद्यार्थी के लिए उपयुक्त प्रतिक्रिया संभव होती हैं, जिसे विभेदन भी कहा जाता है।

कुछ विद्यार्थी अपनी अधिगम-प्रक्रिया में क्रमिक वृद्धि करते हैं; अन्य तेजी से सुधार करते हैं। जो शिक्षक जानते हैं कि विद्यार्थी किस तरह से सीखते हैं उनके पास विविध प्रकार की गतिविधियाँ होती हैं जिन्हें कक्षा की विभिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए एक साथ किया जा सकता है। इसका लक्ष्य हर विद्यार्थी को उपयुक्त ढंग से चुनौती देना होता है, ताकि कोई विद्यार्थी पीछे न रह जाए, और अच्छी प्रगति करने वाले महसूस करें कि वे प्रभावी ढंग से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

कक्षा के हर विद्यार्थी का एक अलग आरंभ बिंदु होता है। शिक्षक को हर विद्यार्थी की पूर्व–ज्ञान का पता होना चाहिए। इससे शिक्षक अपनी गतिविधियों को नियोजित करने में सक्षम होते हैं ताकि वे उनके सभी विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त हों, और सभी विद्यार्थियों के प्रभावी ढंग से सीखने में सहायता करने के लिए वे इन गतिविधियों पर निर्माणात्मक प्रतिक्रिया को विभेदित कर सकते हैं।

गतिविधि 5: विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी करने के लिए आकलन डेटा का उपयोग करना

इस बात पर सोचते हुए कुछ समय व्यतीत करें कि आप कैसे जाँच करेंगे कि आपके शिक्षक:

- जिन कक्षाओं को वे पढ़ाते हैं उनके विद्यार्थियों की पूर्व–ज्ञान से परिचित हैं
- विभिन्न अधिगम-प्रक्रिया की पेशकश करते हैं
- निर्माणात्मक आकलनों को रिकार्ड कर रहे हैं
- अपने विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी कर रहे हैं।

उस जानकारी के स्रोतों, जिनका आप उपयोग कर सकते हैं और आप प्रमाण कैसे प्राप्त करेंगे इसके बारे में अपनी अधिगम डायरी में नोट्स बनाएं – धारणाएं और ख्यातियाँ मार्ग में आ सकती हैं। आपको पता चल सकता है कि इन तरीकों के बारे में आपके पास फिलहाल बहुत कम पक्के प्रमाण हैं और तब आपके नोट्स ही आपको उस बिंदु तक ले जाएंगे जहाँ आपको ऐसा डेटा मिल सकता है।

परिचर्चा

आपके विद्यालय के संदर्भ पर निर्भर करते हुए, आप महसूस कर सकते हैं कि आपके शिक्षक अपनी परिपाटी के दैनिक हिस्से के रूप में सीखने के लिए आकलन की पहले से ही स्थापना कर रहे हैं। वैकल्पिक रूप से, आपको महसूस हो सकता है कि वे उसकी संभावना को समझने की शुरुआत ही कर रहे हैं। आप चाहें जिस स्थिति में हों, सीखने के लिए आकलन को सन्निहित करने में समय और मेहनत लगती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इसमें अध्यापन के कई पहलू शामिल होते हैं, जैसे कक्षा की गतिविधियाँ, आकलन की प्रकृति और प्रयोजन, और शिक्षक-शविद्यार्थी संवाद की प्रकृति।

इस तरह के परिवर्तन के नेतृत्व के लिए सावधानीपूर्वक नियोजन और निगरानी करने की जरूरत पड़ेगी जिनमें से दोनों ही आपके संदर्भ और आप कितने शिक्षकों के साथ काम कर रहे हैं इस बात पर निर्भर होंगे। किसी छोटे विद्यालय में, आप अपने सभी शिक्षकों के साथ विचारों पर चर्चा करने में और अवलोकन करके, विचारों को साझा करके तथा नतीजों पर चर्चा करके निगरानी करने में सक्षम हो सकते हैं। बड़े संदर्भ में, आप चाहें तो शिक्षकों के छोटे समूह से शुरू कर सकते हैं और विद्यालय में अन्य लोगों के सीखने के लिए एक व्यावहारिक उदाहरण विकसित कर सकते हैं।

एकत्र किया गया डेटा प्रमाण उपलब्ध कराता है जिस पर अध्यापन की उत्तम रणनीति और कक्षाओं तथा विभिन्न विद्यार्थियों के लिए लघु- और दीर्घ अवधि के नियोजन का निर्माण किया जा सकता है। सीखने, बोध, कौशलों और दृष्टिकोणों के स्तरों का अनुमान लगाने की बजाय, निर्माणात्मक आकलन व्यक्ति और कक्षा की प्रगति को मापने के लिए वास्तविक स्तरों और आधाररेखाओं का कड़ा प्रमाण प्रदान करता है।

6 सारांश

इस इकाई में एक विद्यालय के भीतर अधिक समर्थक आकलन रणनीति बनाने में सीखने के लिए आकलन की भूमिका पर विचार किया गया है। इसने पहचान की है कि निर्माणात्मक आकलन में विद्यार्थियों को तत्काल और विभेदित प्रतिक्रिया प्रदान करने की क्षमता है जो उन्हें विषय-वस्तु सीखने और उन कौशलों को विकसित करने में मदद करती है जो उन्हें अंततः अधिक प्रभावी विद्यार्थी बनाएंगे।

इस इकाई में नेतृत्व करने वाले शिक्षकों के लिए अपनी कक्षाओं में अधिगम रणनीतियों के लिए आकलन का उपयोग करने के लिए कुछ रणनीतियों का सुझाव भी दिया गया है। इसमें वर्तमान विधियों की पहचान करना और रुब्रिक्स का विकास करने और उनका उपयोग करने के तरीकों को समझना भी शामिल है।

यह इकाई इकाइयों के उस समूह या वर्ग का हिस्सा है जो पढ़ाने-अधिगम प्रक्रिया में बदलाव करने के महत्वपूर्ण क्षेत्र से संबंधित है (एलायन्ड टू द नेशनल कॉलेज ऑफ स्कूल लीडरशिप)। आप अपने ज्ञान और कौशलों को विकसित करने के लिए इस समूह में आगे आने वाली अन्य इकाइयों पर नज़र डालकर लाभान्वित हो सकते हैं:

- *प्रारम्भिक विद्यालय में पढ़ाने और सीखने में सुधारों का नेतृत्व करना*
- *माध्यमिक विद्यालय में पढ़ाने और सीखने में सुधारों का नेतृत्व करना*
- *कार्य-प्रदर्शन बढ़ाने में शिक्षकों की सहायता करना*
- *शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का नेतृत्व करना*
- *परामर्श देना और प्रशिक्षित करना*
- *अपने विद्यालय में अधिगम प्रभावी संस्कृति का विकास करना*
- *अपने विद्यालय में समावेश को प्रोत्साहित करना*
- *विद्यार्थियों की प्रभावी अधिगम-प्रक्रिया के लिए संसाधनों का प्रबंधन करना*
- *अपने विद्यालय में प्रौद्योगिकी के उपयोग का नेतृत्व करना।*

संसाधन

संसाधन **1:** प्रगति और निष्पादन का आकलन करना

विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन करने के दो उद्देश्य हैं:

- योगात्मक मूल्यांकन पीछे मुड़ कर देखता है और जो पहले से सीखा गया है उसका निर्णय करता है। यह सामान्यतया परीक्षणों के स्वरूप में आयोजित किया जाता है, जहाँ विद्यार्थियों को परीक्षा में प्रश्नों के प्रति उनकी उपलब्धियों को बताते हुए श्रेणीकृत किया जाता है। इससे परिणामों की रिपोर्टिंग में मदद मिलती है।
- निर्माणात्मक मूल्यांकन (या अधिगम का मूल्यांकन) काफ़ी अलग है, जो अधिक अनौपचारिक तथा नैदानिक स्वरूप का होता है। शिक्षक उन्हें अधिगम प्रक्रिया के अंग के रूप में उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए, जहाँ यह पता लगाने के लिए प्रश्न पूछने का उपयोग किया जाता है कि क्या विद्यार्थियों ने किसी चीज़ को समझा है या नहीं। इस मूल्यांकन के परिणामों का फिर अगले शिक्षण अनुभव को बदलने के लिए उपयोग किया जाता है। निगरानी और फ़ीडबैक निर्माणात्मक मूल्यांकन का हिस्सा है।

निर्माणात्मक मूल्यांकन शिक्षा-प्राप्ति को बढ़ाता है, क्योंकि इसके लिए, अधिकांश विद्यार्थियों को:

- समझना चाहिए कि उनसे क्या अधिगम उम्मीद की जा रही है
- जानना चाहिए कि अपनी पढ़ाई में वे इस समय किस स्तर पर हैं
- समझना चाहिए कि वे किस प्रकार प्रगति कर सकते हैं (अर्थात क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए)
- जानना चाहिए कि कब उन्होंने लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम हासिल कर लिए हैं।

शिक्षक के रूप में, अगर आप प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त चार बिंदुओं पर ध्यान देंगे, तो आप अपने विद्यार्थियों से सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करेंगे। इस प्रकार पढ़ाने से पहले, पढ़ाते समय और पढ़ाने के बाद मूल्यांकन किया जा सकता है:

- पहले: पढ़ाने से पहले मूल्यांकन से आपको यह जानने में मदद मिलती है कि विद्यार्थी क्या जानते हैं और पढ़ाने से पहले क्या कर सकते हैं। यह आधार-रेखा (पूर्व–ज्ञान)निर्धारित करता है और आपको अपनी शिक्षण योजना तैयार करने के लिए प्रारंभिक बिंदु देता है। विद्यार्थी क्या जानते हैं इस बारे में अपनी समझ को बढ़ाने से, विद्यार्थियों को जिसमें पहले से ही महारत हासिल है, उसे दुबारा पढ़ाने या संभवतः उन्हें जो जानना या समझना है (लेकिन नहीं जानते), उसे छोड़ने के मौक़े कम होंगे।
- पढ़ाते समय: कक्षा में पढ़ाते समय मूल्यांकन करने में यह देखना शामिल है कि क्या विद्यार्थी सीख रहे हैं और उनमें सुधार हो रहा है। इससे आपको अपनी शिक्षण पद्धति, संसाधनों और गतिविधियों का समायोजन करने में मदद मिलेगी। यह आपको यह समझने में मदद करेगा कि विद्यार्थी वांछित उद्देश्य की दिशा में किस प्रकार प्रगति कर रहा है और आपका शिक्षण कितना सफल है।
- पढ़ाने के बाद: शिक्षण के बाद किया जाने वाला मूल्यांकन पुष्टि करता है कि विद्यार्थियों ने क्या सीखा है और आपको दर्शाता है कि किसने सीखा है और किसे अभी मदद की ज़रूरत है। इससे आप अपने शिक्षण लक्ष्य का प्रभावी आकलन कर सकेंगे।

पहले: आपके विद्यार्थी क्या सीखेंगे इस बारे में स्पष्ट होना

जब आप तय करते हैं कि विद्यार्थियों को पाठ या पाठों की शृंखला में क्या सीखना चाहिए, तो आपको उसे उनके साथ साझा करना चाहिए। सावधानी से अंतर करें कि विद्यार्थियों को आप क्या करने के लिए कह रहे हैं, और विद्यार्थियों से क्या अधिगम उम्मीद की जा रही है। ऐसा प्रश्न पूछिये जिससे कि आपको इस बात का आकलन करने का अवसर प्राप्त हो कि क्या उन्होंने वाक़ई समझा है या नहीं। उदाहरण के लिए:

विद्यार्थियों को जवाब देने से पहले सोचने के लिए कुछ सेकंड दें, या विद्यार्थियों को पहले दो–दो के जोड़ों या छोटे समूहों में अपने जवाब पर चर्चा करने के कहें। जब वे आपको अपना उत्तर बताएँ, आप जान जाएँगे कि क्या वे समझते हैं कि उन्हें क्या सीखना है।

पहले**:** शिक्षण/अधिगम के पूर्व जानना कि विद्यार्थी किस स्तर पर हैंः

आपके विद्यार्थियों में सुधार के लिए मदद करने के क्रम में आपको और उन्हें उनके ज्ञान और समझदारी की वर्तमान अवस्था को जानने की ज़रूरत पड़ेगी। जैसे ही आप वांछित शिक्षण परिणामों या लक्ष्यों को साझा कर लें, आप निम्न कर सकते हैं:

- विद्यार्थियों को मानसिक मानचित्र बनाने या उस विषय के बारे में वे पहले से क्या जानते हैं, उसे सूचीबद्ध करने के लिए दो–दो के जोड़ों में कार्य करने के लिए कहें, और उन्हें उसे पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दें, लेकिन उन चंद विचारों के लिए बहुत ज्यादा समय नहीं देना चाहिए। उसके बाद आप उन मानसिक चित्रण या सूचियों की समीक्षा करें।
- महत्वपूर्ण शब्दावली को बोर्ड पर लिखें और प्रत्येक शब्द के बारे में वे क्या जानते हैं, यह बताने के लिए स्वेच्छा से उन्हें आगे आने के लिए कहें। फिर बाक़ी कक्षा से कहें कि यदि वे शब्द समझते हैं, तो अपना हाथ उठाने की मुद्रा में ऊपर उठाएँ, यदि वे बहुत कम जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते हैं, तो थम्ब्स-डाउन की मुद्रा में नीचे करें और यदि वे कुछ जानते हैं, तो अंगूठे को क्षैतिज यानी बीच में रखें।

कहाँ से शुरुआत करनी है, यह जानने का मतलब है कि आप अपने विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक और रचनात्मक रूप से पाठ की योजना बना सकते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि आपके विद्यार्थी यह मूल्यांकन करने में सक्षम हों कि वे कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं, ताकि आप और वे, दोनों जान सकें कि उन्हें आगे क्या अधिगम ज़रूरत है। आपके विद्यार्थियों को स्वयं अपने शिक्षण की जिम्मेदारी उठाने का अवसर प्रदान करने से उन्हें आजीवन शिक्षार्थी बनाने में मदद मिलेगी।

पढ़ाते समय**:** शिक्षण/अधिगम के दौरान विद्यार्थियों की प्रगति सुनिश्चित करनाः

जब आप विद्यार्थियों से उनकी वर्तमान प्रगति के बारे में बात करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि उन्हें आपका फीडबैक उपयोगी और रचनात्मक, दोनों लगे। निम्नांकित के द्वारा इस काम को करें:

- विद्यार्थियों को उनकी क्षमता और यह जानने में मदद करना कि वे कैसे और सुधार कर सकते हैं
- इस बारे में स्पष्ट रहना कि आगे और किस चीज़ के विकास की ज़रूरत है
- इस बारे में सकारात्मक रहना कि वे किस प्रकार अपने अधिगम का विकास कर सकते हैं, जाँचना कि वे समझते हैं और आपकी सलाह का उपयोग करने में सक्षम महसूस करते हैं।

विद्यार्थियों के लिए उनके शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए अवसर प्रदान कराने की ज़रूरत पड़ेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ाई के मामले में विद्यार्थियों के वर्तमान स्तर और जहाँ आप उन्हें देखना चाहते हैं, इसके बीच के अंतराल को पाटने के लिए हो सकता है कि आपको अपनी पाठ योजना को संशोधित करना पड़े। ऐसा करने के लिए आपको निम्नतः करना होगा:

- कुछ ऐसे कार्य पर वापस नज़र दौड़ाना होगा, जिनके बारे में आपने सोचा था कि वे पहले से जानते हैं
- आवश्यकता के अनुसार विद्यार्थियों के समूह बनाना, उन्हें अलग-अलग कार्य देना
- विद्यार्थियों को स्वयं यह निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना कि उन्हें किन संसाधनों को पढ़ने की ज़रूरत है ताकि वे 'स्वयं अपना अंतराल पाट सकें'
- निम्न प्रवेश, ऊँची सीमा' वाले कार्यों का उपयोग करना, ताकि सभी विद्यार्थी प्रगति कर सकें - इन्हें इसलिए डिजाइन किया गया है कि सभी विद्यार्थी काम शुरू कर सकें, लेकिन अधिक समर्थ को प्रतिबंधित न किया जाए और वे अपने ज्ञान के विस्तार के लिए प्रगति कर सकें।

पाठों की रफ्तार को धीमा करके, अक्सर आप दरअसल अधिगम/सीखने को तेज़ करते हैं, क्योंकि आप विद्यार्थियों को उस पर सोचने और समझने का समय और आत्मविश्वास देते हैं, जिसमें उन्हें सुधार लाने की ज़रूरत होती है। विद्यार्थियों को आपस में अपने काम के बारे में बात करने का मौक़ा देकर, और इस बात पर चिंतन करके कि अंतराल कहाँ पर है और वे इसे किस प्रकार से ख़त्म कर सकते हैं, आप उन्हें स्वयं का आकलन करने के तरीक़े प्रदान करा रहे हैं।

पढ़ाने के बाद**:** प्रमाण एकत्रित करने, उसकी व्याख्या करने**,** और आगे की योजना बनाना

जब शिक्षण–अधिगम चलते समय कक्षा-कार्य और गृह-कार्य निर्धारित करने के बाद, ज़रूरी है कि:

- इस बात का पता लगाएँ कि आपके विद्यार्थी कितनी अच्छी तरह कार्य कर रहे हैं
- इसे अगले पाठ के लिए अपनी योजना सूचित करने के लिए उपयोग में लाएँ
- विद्यार्थियों को प्रतिक्रिया दें।

मूल्यांकन की चार प्रमुख स्थितियों की नीचे चर्चा की गई है।

सूचना या प्रमाण एकत्रित करना

प्रत्येक विद्यार्थी, स्वयं अपनी गति और शैली में, स्कूल के अंदर और बाहर अलग प्रकार से सीखता है। इसलिए, विद्यार्थियों का मूल्यांकन करते समय आपको दो चीज़ें करनी होंगी:

- विविध सूत्रों से जानकारी एकत्रित करें - स्वयं अपने अनुभव से, विद्यार्थी, अन्य विद्यार्थियों , अन्य शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से।
- विद्यार्थियों का व्यक्तिगत रूप से, दो–दो के जोड़ों में और समूहों में मूल्यांकन करें, तथा स्व-मूल्यांकन को बढ़ावा दें। अलग विधियों का प्रयोग महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई एक पद्धति आपको वह सभी जानकारी उपलब्ध नहीं कराती, जिसकी आपको ज़रूरत है। विद्यार्थियों के सीखने और प्रगति के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के विभिन्न तरीक़ों में शामिल हैं, देखना, सुनना, विषयों और प्रकरणों पर चर्चा, तथा लिखित कक्षा वर्ग और गृह-कार्य की समीक्षा करना।

अभिलेखन

भारत के सभी स्कूलों में रिकॉर्डिंग का सबसे आम स्वरूप रिपोर्ट कार्ड के उपयोग के माध्यम से होता है, लेकिन इसमें आपको एक विद्यार्थी के सीखने या व्यवहार के सभी पहलुओं को रिकॉर्ड करने की अनुमति नहीं हो सकती है। इस काम को करने के कुछ सरल तरीक़े हैं, जिन पर भी आप विचार कर सकते हैं, जैसे कि:

- शिक्षण–अधिगम के समय जो आप देखते हैं उसे डायरी/नोटबुक/रजिस्टर में नोट करना
- विद्यार्थियों के कार्य के नमूने (लिखित, कला, शिल्प, परियोजनाएँ, कविताएँ आदि) पोर्टफ़ोलियो में रखना
- प्रत्येक विद्यार्थी का प्रोफ़ाइल तैयार करना
- विद्यार्थियों की किन्हीं असामान्य घटनाओं, परिवर्तनों, समस्याओं, शक्तियों और शिक्षण प्रमाणों को नोट करना।

प्रमाण की व्याख्या

जैसे ही सूचना और प्रमाण एकत्रित और अभिलिखित हो जाए, उसकी व्याख्या करना ज़रूरी है, ताकि यह समझ सकें कि प्रत्येक विद्यार्थी किस प्रकार सीख रहा है और प्रगति कर रहा है। इस पर सावधानी से विचार करने और विश्लेषण की आवश्यकता है। फिर आपको शिक्षण में सुधार करने, संभवतः विद्यार्थियों को फ़ीडबैक देकर या नए संसाधनों की खोज करके, समूहों को पुनर्व्यवस्थित करके, या शिक्षण बिंदु को दोहरा कर अपने निष्कर्षों पर कार्य करने की आवश्यककता है।

सुधार हेतु नियोजन

मूल्यांकन, विशिष्ट और विभेदक अधिगम गतिविधियों की स्थापना द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी को सार्थक रूप से अधिगम के अवसर प्रदान करने, अधिक मदद के ज़रूरतमंद विद्यार्थियों पर ध्यान देने और अधिक उन्नत विद्यार्थियों को चुनौती देते हुए सार्थक अधिगम अवसर उपलब्ध कराने में आपकी मदद कर सकते हैं।

संसाधन **2:** निगरानी करना और फीडबैक देना

विद्यार्थियों के निष्पादन में सुधार करने में लगातार निगरानी करना और उन्हें प्रतिक्रिया देना शामिल होता है, ताकि उन्हें पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षित है और उन्हें कामों का पूरा करने पर प्रतिक्रिया प्राप्त हो। आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया के माध्यम से वे अपने निष्पादन में सुधार कर सकते हैं।

निगरानी करना

प्रभावी शिक्षक अधिकांश समय अपने विद्यार्थियों की निगरानी करते हैं। सामान्य तौर पर, अधिकांश शिक्षक अपने विद्यार्थियों के काम की निगरानी वे कक्षा में जो कुछ करते हैं उसे सुनकर और देखकर करते हैं। विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी करना महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे उन्हें निम्नलिखित में मदद मिलती है:

- अधिक ऊँचे ग्रेड प्राप्त करना
- अपने निष्पादन के बारे में अधिक सजग रहना और अपनी अधिगम प्रक्रिया के प्रति अधिक जिम्मेदार होना
- अपनी अधिगम प्रक्रिया में सुधार करना
- प्रादेशिक और स्थानीय मानकीकृत परीक्षाओं में उपलब्धि का पूर्वानुमान करना।

इससे आपको एक शिक्षक के रूप में निम्नलिखित तय करने में भी मदद मिलती है:

- कब प्रश्न पूछें या प्रोत्साहित करें
- कब प्रशंसा करें
- चुनौती दें या नहीं
- एक काम में विद्यार्थियों के अलग–अलग समूहों को कैसे शामिल करें
- गलतियों के विषय में क्या करें।

विद्यार्थी सबसे अधिक सुधार तब करते हैं जब उन्हें उनकी प्रगति के बारे में स्पष्ट और शीघ प्रतिक्रिया दी जाती है। निगरानी करने का उपयोग करना, आपको विद्यार्थियों को बताने कि वे कैसे काम कर रहे हैं और उनके अधिगम प्रकिया को उन्नत करने में उन्हें किस अन्य चीज की जरूरत है, इस बारे में नियमित प्रतिक्रिया देने में सक्षम करेगा।

आपके सामने आने वाली चुनौतियों में से एक होगी अपने विद्यार्थियों की उनके स्वयं के सीखने के लक्ष्यों को तय करने में मदद करना, जिसे स्व-निगरानी भी कहा जाता है। विद्यार्थी, विशेष तौर पर, कठिनाई अनुभव करने वाले विद्यार्थी, अपनी स्वयं की अधिगम प्रक्रिया का बोझ उठाने के आदी नहीं होते हैं। लेकिन आप किसी परियोजना के लिए अपने स्वयं के लक्ष्य या उद्देश्य तय करने, अपने काम की योजना बनाने और समय सीमाएं तय करने, और अपनी प्रगति की स्व-निगरानी करने में किसी भी विद्यार्थी की मदद कर सकते हैं। स्व-निगरानी के कौशल की प्रक्रिया का अभ्यास और उसमें महारत हासिल करना उनके लिए विद्यालय और उनके सारे जीवन में उपयोगी साबित होगा।

विद्यार्थियों की बात सुनना और अवलोकन करना

अधिकांश समय, शिक्षक स्वाभाविक रूप से विद्यार्थियों की बात सुनते और उनका अवलोकन करते हैं; यह निगरानी करने का एक सरल साधन है। उदाहरण के लिए, आप:

- अपने विद्यार्थियों को ऊँची आवाज में पढ़ते समय सुन सकते हैं
- दो–दो की जोड़ियों में या समूहकार्य में चर्चाएं सुन सकते हैं
- विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर या कक्षा में संसाधनों का उपयोग करते देख सकते हैं
- समूहों के काम काम करते समय उनकी शारीरिक भाषा का प्रेक्षण कर सकते हैं।

सुनिश्चित करें कि आप जो विचार एकत्रित करते हैं वे विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया या प्रगति का सच्चा प्रमाण हो। सिर्फ वही बात रिकार्ड करें जो आप देख सकते हैं, सुन सकते हैं, उचित सिद्ध कर सकते हैं या जिस पर आप विश्वास कर सकते हैं।

जब विद्यार्थी काम करें, तब कमरे में घूमें और संक्षिप्त अवलोकन–बिन्दुओं के नोट्स बनाएं। आप कक्षा सूची का उपयोग करके दर्ज कर सकते हैं कि किन विद्यार्थियों को अधिक मदद की जरूरत है, और किसी भी उभरती गलतफहमी को भी नोट कर सकते हैं। इन प्रेक्षणों और नोट्स का उपयोग आप सारी कक्षा को प्रतिक्रिया देने या समूहों अथवा व्यक्ति विशेष को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया देना

प्रतिक्रिया वह जानकारी होती है जो आप किसी विद्यार्थी को यह बताने के लिए देते हैं कि उन्होंने किसी घोषित लक्ष्य या अपेक्षित परिणाम के संबंध में कैसा कार्य किया है। प्रभावी प्रतिक्रिया विद्यार्थी को:

- जानकारी देती है कि क्या हुआ है
- इस बात का मूल्यांकन देती है कि कोई कार्यवाही या काम कितनी अच्छी तरह से किया गया
- मार्गदर्शन देती है कि निष्पादन को कैसे सुधारा जा सकता है।

जब आप हर विद्यार्थी को प्रतिक्रिया देते हैं, तब उसे यह जानने में उनकी मदद करनी चाहिए कि:

- वे वास्तव में क्या कर सकते हैं
- वे अभी क्या नहीं कर सकते हैं
- उनका काम अन्य लोगों की तुलना में कैसा है
- वे कैसे सुधार कर सकते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि प्रभावी प्रतिक्रिया विद्यार्थियों की मदद करती है। आप नहीं चाहते कि आपकी प्रतिक्रिया के अस्पष्ट या अन्यायपूर्ण होने के कारण अधिगम प्रक्रिया में कोई रूकावट आए। प्रभावी प्रतिक्रिया:

- हाथ में लिए गए काम और विद्यार्थी द्वारा सीखी जा रही बात पर संकेंद्रित होती है

- स्पष्ट और ईमानदार होती है, और विद्यार्थी को बताती है कि उसके अधिगम प्रक्रिया के बारे में क्या अच्छी बात है और उसे कहाँ सुधार करना चाहिए
- कार्यवाही के योग्य होती है, और विद्यार्थी को ऐसा कुछ करने को कहती है जिसे करने में वे सक्षम होते हैं
- विद्यार्थी के समझ सकने योग्य उपयुक्त भाषा में दी जाती है
- सही समय पर दी जाती है – यदि वह बहुत जल्दी दी गई तो विद्यार्थी सोचेगा 'मैं यही तो करने जा रहा था!'; बहुत देर से दी गई तो विद्यार्थी का ध्यान और कहीं चला जाएगा और वह वापस लौटकर वह नहीं करना चाहेगा जिसके लिए उसे कहा गया है।

प्रतिक्रिया चाहे बोली जाए या विद्यार्थियों की वर्कबुकों में लिखी जाए, वह तभी अधिक प्रभावी होती है यदि वह नीचे दिए गए दिशानिर्देशों का पालन करती है।

प्रशंसा और सकारात्मक भाषा का उपयोग करना

जब हमारी प्रशंसा की जाती है और हमें प्रोत्साहित किया जाता है तो आमतौर पर हम उस समय के मुकाबले काफी अधिक बेहतर महसूस करते हैं, जबकि हमारी आलोचना की जाती है या हमारी गलती सुधारी जाती है। पुनर्वलन और सकारात्मक भाषा समूची कक्षा और सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए प्रेरणादायक होती है। याद रखें कि प्रशंसा को विशिष्ट और स्वयं विद्यार्थी के बजाय किए गए काम पर लक्षित होना चाहिए, अन्यथा वह विद्यार्थी की प्रगति में मदद नहीं करेगी। 'शाबाश' अविशिष्ट शब्द है, इसलिए निम्नलिखित में से कोई बात कहना बेहतर होगा:

संकेत देने के साथ-साथ सुधार का उपयोग करना

अपने विद्यार्थियों के साथ आप जो बातचीत करते हैं वह उनके सीखने में मदद करती है। यदि आप उन्हें बताते हैं कि उनका उत्तर गलत है और संवाद को वहीं समाप्त कर देते हैं, तो आप सोचने और स्वयं प्रयास करने में उनकी मदद करने का अवसर खो देते हैं। यदि आप विद्यार्थियों को संकेत देते हैं या आगे कोई प्रश्न पूछते हैं, तो आप उन्हें अधिक गहराई से सोचने को प्रेरित करते हैं और उत्तर खोजने तथा अपने स्वयं के सीखने का दायित्व लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिए, आप बेहतर उत्तर के लिए प्रोत्साहित या किसी समस्या पर किसी अलग दृष्टिकोण को प्रेरित करने के लिए निम्नलिखित जैसी बातें कह सकते हैं:

दूसरे विद्यार्थियों को एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना उपयुक्त हो सकता है। आप यह काम निम्नलिखित जैसी टिप्पणियों के साथ शेष कक्षा के लिए अपने प्रश्नों को प्रस्तुत करके कर सकते हैं:

विद्यार्थियों को हां या नहीं के साथ सुधारना स्पेलिंग या संख्या के अभ्यास की तरह के कामों के लिए उपयुक्त हो सकता है, लेकिन यहां पर भी आप विद्यार्थियों को उभरते प्रतिमानों पर नजर डालने या समान उत्तरों से संबंध बनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं या चर्चा शुरू कर सकते हैं कि कोई उत्तर गलत क्यों है।

स्वयं सुधार करना और समकक्षों से सुधार करवाना प्रभावी होता है और आप इसे विद्यार्थियों से दिए गए कामों को दो–दो की जोड़ियों में करते समय स्वयं अपने और एक दूसरे के काम की जाँच करने को कहकर प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक समय में एक पहलू को सही करने पर ध्यान केंद्रित

करना सबसे अच्छा होता है ताकि भ्रम में डालने वाली ढेर सारी जानकारी न हो।

संसाधन **3:** आकलन रूब्रिक्स को कैसे डिजाइन करें

रुब्रिक्स निष्पादन के विभिन्न स्तरों का वर्णन करते हैं और उन्हें विद्यार्थियों तथा शिक्षक के लिए स्पष्ट करते हैं। सबसे पहले आपको ज्ञान के स्तरों और उस समझ की पहचान करनी है जिन्हें प्रदर्शित करने की विद्यार्थी को जरूरत है और इससे आप सफलता के मापदंड लिख सकते हैं।

फिर आपको उपलब्धि के विभिन्न स्तरों को विभेदित करना होगा ताकि आप निष्पादन के स्तरों (हो सकता है तीन स्तरों तक) के विवरण लिख सकें। उदाहरण के लिए आप इस प्रकार के स्तर लिख सकते हैं:

1. प्रकाश-संश्लेषण को सटीक ढंग से समझाता है
2. प्रकाश-संश्लेषण की प्रक्रिया को कुछ सटीकता से समझाता है
3. प्रकाश-संश्लेषण को सीमित सटीकता से समझाता है

या:

1. कहानी, थीमों और किरदारों का व्यापक ज्ञान प्रदर्शित करता है
2. कहानी और कुछ किरदारों की भूमिकाओं का अच्छा ज्ञान दर्शाता है
3. इस बारे में मूलभूत जानकारी दर्शाता है कि कहानी किस बारे में है और कुछ किरदारों के नाम बता सकता है

या:

1. उपकरण का सही ढंग से और स्वतंत्र रूप से उपयोग करता है
2. उपकरण का यदा-कदा समकक्ष या शिक्षक की सहायता से उपयोग करता है
3. उपकरण का उपयोग शिक्षक के मार्गदर्शन के साथ करने का प्रयास करता है

इन स्तर निरूपकों का उपयोग विद्यार्थियों के साथ और विद्यार्थियों के द्वारा यह समझाने के लिए किया जा सकता है कि उन्होंने कैसा कार्य-प्रदर्शन किया है और अधिक हासिल करने के लिए उन्हें क्या करने की जरूरत है।

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Assessment for Learning, http://www.assessmentforlearning.edu.au/default.asp?id=912 (accessed 20 October 2014).

Central Board of Secondary Education (2009) *Teachers' Manual on Continuous and Comprehensive Evaluation: Classes IX & X*. Delhi: Central Board of Secondary Education. Available from: http://www.cbse.nic.in/cce/index.html (accessed 20 October 2014).

Intellectual Takeout (undated) 'Middle and high schools critical-thinking rubric' (online). Available from: http://www.intellectualtakeout.org/library/chart-graph/middle-and-high-schools-critical-thinking-rubric (accessed 20 October 2014).

National Council of Educational Research and Training (2005) *National Curriculum Framework* (NCF). New Delhi: NCERT.

Valerie Burger [Pinterest user] (undated) 'Art rubrics elementary grade level' (online), Pinterest. Available from: http://www.pinterest.com/pin/391602130070842472/ (accessed 20 October 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

तालिका 1: बौद्धिक निष्कर्ष से लिया गया निष्कर्ष (अदिनांकित) fमिडिल और हाई स्कूलों का महत्वपूर्ण ढंग से सोचने वाला रुब्रिक', http://www.intellectualtakeout.org में। (Table 1: extract from Intellectual Takeout (undated) 'Middle and high schools critical thinking rubric', in http://www.intellectualtakeout.org.)

तालिका 2: निम्नलिखित से अनुकूलित: वालेरी बंगर [पिंटरेस्ट उपयोगकर्ता] (अदिनांकित) 'आर्ट रुब्रिक्स एलीमेंटरी ग्रेड लेवल', http://www.pinterest.com से उपलब्ध। (Table 2: adapted from Valerie Burger [Pinterest user] (undated) 'Art rubrics elementary grade level', available from http://www.pinterest.com.]

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।